الجزء ١١

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ

उन की तरफ़	तुम लौट कर जाओगे	जब	तुम्हारे पास	उज़्र लाएंगे

قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ

तुम्हारी सब ख़बरें (हालात)	अल्लाह	हमें बता चुका है	तुम्हारा	हरगिज़ हम यक़ीन न करेंगे	उज़्र न करो	आप (स) कह दें

وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

पोशीदा	जानने वाले	तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	फिर	और उस का रसूल	तुम्हारे अ़मल	अल्लाह	और अभी देखेगा

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	अब क़स्में खाएंगे	94	तुम करते थे	वह जो	फिर वह तुम्हें जता देगा	और ज़ाहिर

لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ

उन से	सो तुम मुँह मोड़ लो	उन से	ताकि तुम दरगुज़र करो	उन की तरफ़	वापस जाओगे तुम	जब	तुम्हारे आगे

اِنَّهُمْ رِجْسٌ ز وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ج جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

95	वह कमाते	थे	उस का जो	बदला	जहन्नम	और उन का ठिकाना	पलीद	बेशक वह

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ج فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	उन से	तुम राज़ी हो जाओ	सो अगर	उन से	ताकि तुम राज़ी हो जाओ	तुम्हारे आगे	वह क़स्में खाते हैं

لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾ اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا

कुफ़्र में	बहुत सख़्त	देहाती	96	नाफ़रमान	लोग	से	राज़ी नहीं होता

وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

पर	अल्लाह	नाज़िल किए	जो	एहकाम	कि वह न जानें	और ज़ियादा लाइक़	और निफ़ाक़ में

رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ

लेते हैं (समझते हैं)	जो	देहाती	और से (बाज़)	97	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपना रसूल (स)

مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ

उन पर	गर्दिशें	तुम्हारे लिए	और इन्तिज़ार करते हैं	तावान	जो वह ख़र्च करते हैं

دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ

जो	देहाती	और से (बाज़)	98	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	बुरी	गर्दिश

يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ

नज़्दीकियां	जो वह ख़र्च करें	और समझते हैं	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	ईमान रखते हैं

عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ

उन के लिए	नज़्दीकी	यक़ीनन वह	हां हां	रसूल	और दुआएं	अल्लाह से

ع ١٠ ١٢ ١ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

99	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	अपनी रहमत	में	अल्लाह	जल्द दाख़िल करेगा उन्हें

जब तुम उन की तरफ़ लौट कर जाओगे तो वह तुम्हारे पास उज़्र लाएंगे। कह दो कि उज़्र न करो, हम हरगिज़ यक़ीन न करेंगे तुम्हारा, अल्लाह हमें तुम्हारी सब ख़बरें बता चुका है, और अभी अल्लाह तुम्हारे अ़मल देखेगा और उस का रसूल (स), फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर वह तुम्हें जता देगा तुम जो करते थे। (94)

जब तुम उन की तरफ़ वापस जाओगे तब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़स्में खाएंगे ताकि तुम उन से दरगुज़र करो, सो तुम उन से मुँह मोड़ लो, बेशक वह पलीद हैं, और उन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (95)

वह तुम्हारे आगे क़स्में खाते हैं ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ, सो अगर तुम उन से राज़ी (भी) हो जाओ तो बेशक अल्लाह राज़ी नहीं होता नाफ़रमान लोगों से। (96)

देहाती कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं, और ज़ियादा इमकानात हैं कि वह न जानें जो एहकाम अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल किए, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (97)

और बाज़ देहाती हैं जो (अल्लाह की राह में) जो ख़र्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे लिए गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं, उन्हीं पर है बुरी गर्दिश, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (98)

और बाज़ देहाती हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो वह ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह से नज़्दीकियाँ और रसूल (स) की दुआएं (लेने का ज़रीआ़) समझते हैं, हां हां! यक़ीनन वह नज़्दीकी का (ज़रीआ़) है उन के लिए, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (99)

और सब से पहले (ईमान और इस्लाम में) सबक़त करने वाले मुहाजरीन और अन्सार में से, और जिन्हों ने नेकी के साथ पैरवी की, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह उस से राज़ी हुए, और उस ने उन के लिए बाग़ात तैयार किए हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। **(100)** और जो देहाती तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से बाज़ मुनाफ़िक़ हैं, और मदीने वालों में से बाज़ निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं और हम जल्द उन्हें दो बार अ़ज़ाब देंगे, फिर वह अ़ज़ाबे अ़ज़ीम की तरफ़ लौटाए जाएंगे। **(101)** और कुछ और हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, उन्हों ने एक अच्छा और दूसरा बुरा अ़मल मिला लिया, क़रीब है कि अल्लाह उन्हें माफ़ करदे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। **(102)** आप (स) उन के मालों में से ज़कात ले लें, आप (स) उन्हें पाक और साफ़ कर दें उस से, और उन पर दुआए (ख़ैर) करें, बेशक आप(स) की दुआ उन के लिए (बाइसे) सुकून है और अल्लाह सुनने वाला,जानने वाला है। **(103)** क्या उन्हें इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है, और क़ुबूल करता है सदक़ात और यह कि अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने वाला, निहायत मेह्रबान है। **(104)** और आप (स) कहदें तुम अ़मल किए जाओ, पस अब देखेगा अल्लाह और उस का रसूल (स), और मोमिन तुम्हारे अ़मल, और तुम जल्द पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। **(105)** और कुछ और हैं वह अल्लाह के हुक्म पर मौक़ूफ़ रखे गए हैं, ख़्वाह वह उन्हें अ़ज़ाब दे और ख़्वाह उन की तौबा क़ुबूल कर ले, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। **(106)**

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ

और जिन लोगों	और अन्सार	मुहाजरीन	से	सब से पहले	और सबक़त करने वाले

اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ

उन के लिए	और तैयार किया उस ने	उस से	और वह राज़ी हुए	राज़ी हुआ अल्लाह उन से	नेकी के साथ	उस की पैरवी की

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ

यह	हमेशा	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَمِنْ

और से (बाज़)	मुनाफ़िक़ (जमा)	देहाती	से बाज़	तुम्हारे इर्द गिर्द	और उन में जो	100	कामयाबी बड़ी

اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۟ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ

हम	तुम नहीं जानते उन को	निफ़ाक़	पर	अड़े हुए हैं	मदीने वाले

نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾

101	अ़ज़ीम	अ़ज़ाब	तरफ़	वह लौटाए जाएंगे	फिर	दो बार	जल्द हम उन्हें अ़ज़ाब देंगे	जानते हैं उन्हें

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ

बुरा	और दूसरा	एक अ़मल अच्छा	उन्हों ने मिलाया	अपने गुनाहों का	उन्हों ने एतराफ़ किया	और कुछ और

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ

लेलें आप (स)	102	निहायत मेह्रबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	माफ़ कर दे उन्हें	कि	अल्लाह	क़रीब है

مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ

उन पर	और दुआ करो	उस से	और साफ़ कर दो	तुम पाक कर दो	ज़कात	उनके माल (जमा)	से

اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ

कि	क्या उन्हें इल्म नहीं	103	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	सुकून	आप (स) की दुआ	बेशक

اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

सदक़ात	और क़ुबूल करता है	अपने बन्दे	से-की	तौबा	क़ुबूल करता है	वह	अल्लाह

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ

अल्लाह	पस अब देखेगा	तुम किए जाओ अ़मल	और कह दें आप (स)	104	निहायत मेह्रबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	और यह कि अल्लाह

عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

जानने वाला पोशीदा	तरफ़	और जल्द लैटाए जाओग	और मोमिन (जमा)	और उसका रसूल (स)	तुम्हारे अ़मल

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ

मौक़ूफ़ रखे गए	और कुछ और	105	तुम करते थे	वह जो	सो वह तुम्हें जता देगा	और ज़ाहिर

لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

106	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तौबा क़ुबूल कर ले उन की	और ख़्वाह	वह उन्हें अ़ज़ाब दे	ख़्वाह	अल्लाह के हुक्म पर

ع ٥
عند المتقدمين ١٢
وقف منزل

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًاۢ بَيْنَ

दरमियान	और फूट डालने को	और कुफ़्र के लिए	नुक़्सान पहुँचाने को	मस्जिद	उन्हों ने बनाई	और वह लोग जो

الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ

पहले	से	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	उस ने जंग की	उस के वास्ते जो	और घात की जगह बनाने के लिए	मोमिनों (जमा)

وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ

वह यक़ीनन	गवाही देता है	और अल्लाह	भलाई	मगर (सिर्फ़)	हम ने चाहा	नहीं	और वह अल्बत्ता क़समें खाएंगे

لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى

तक़्वा	पर	बुन्याद रखी गई	बेशक वह मस्जिद	कभी	उस में	आप (स) न खड़े होना	107	झूटे हैं

مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ

कि	वह चाहते हैं	ऐसे लोग	उस में	आप (स) खड़े हों उस में	कि	ज़ियादा लाइक़	दिन	पहले	से

يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ

अपनी इमारत	बुन्याद रखी	सो क्या वह जो	108	पाक रहने वाले	महबूब रखता है	और अल्लाह	वह पाक रहें

عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ

अपनी इमारत	बुन्याद रखी	जो-जिस	या	बेहतर	और ख़ुशनूदी	अल्लाह से	तक़्वा (ख़ौफ़)	पर

عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	दोज़ख़ की आग	में	उस को लेकर	सो गिर पड़ी	गिरने वाला	खाई	किनारा	पर

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا

बुन्याद रखी	जो कि	उन की इमारत	हमेशा रहेगी	109	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता

ع ١٣ ١١ ٢ رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّاۤ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾

110	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	उन के दिल	यह कि टुकड़े हो जाएं	मगर	उन के दिल	में	शक

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ

और उन के माल	उन की जानें	मोमिन (जमा)	से	ख़रीद लिए	बेशक अल्लाह

بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ

सो वह मारते हैं	अल्लाह की राह	में	वह लड़ते हैं	जन्नत	उन के लिए	उस के बदले

وَيُقْتَلُوْنَ ۟ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

और इंजील	तौरात में	सच्चा	उस पर	वादा	और मारे जाते हैं

وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

पस ख़ुशियां मनाओ	अल्लाह से	अपना वादा	ज़ियादा पूरा करने वाला	और कौन	और क़ुरआन

بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾

111	अज़ीम	कामयाबी	वह	और यह	उस से	तुम ने सौदा किया	जो कि	सो अपने सौदे पर

और वह लोग जिन्हों ने मस्जिद ज़रार (नुक़्सान पहुँचाने के लिए) बनाई और कुफ़्र करने के लिए, और मोमिनों के दरमियान फूट डालने के लिए और उस के वास्ते घात की जगह बनाने के लिए जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से जंग की उस से पहले, और वह अल्बत्ता क़समें खाएंगे कि हम ने सिर्फ़ भलाई चाही, और अल्लाह गवाही देता है वह यक़ीनन झूटे हैं। (107)

आप (स) उस में कभी न खड़े होना, बेशक वह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से तक़्वे पर रखी गई है ज़ियादा लाइक़ है कि आप (स) उस में खड़े हों, उस में ऐसे लोग हैं जो चाहते हैं कि वह पाक रहें, और अल्लाह महबूब रखता है पाक रहने वालों को। (108)

सो क्या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद अल्लाह के ख़ौफ़ और (उस की) ख़ुशनूदी पर रखी, वह बेहतर है? या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद गिरने वाली खाई (गढ़े) के किनारे पर रखी? सो वह उसको लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (109)

वह इमारत जिस की उन्हों ने बुन्याद रखी है हमेशा शक डालती रहेगी उन के दिलों में, मगर यह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (110)

बेशक अल्लाह ने ख़रीद लीं मोमिनों से उन की जानें और उन के माल, उस के बदले कि उन के लिए जन्नत है, वह लड़ते हैं अल्लाह की राह में, सो वह मारते हैं और मारे (भी) जाते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात में, और इंजील और क़ुरआन में, और अल्लाह से ज़ियादा कौन अपना वादा पूरा करने वाला है? पस अपने उस सौदे पर ख़ुशियां मनाओ जो तुम ने उस से सौदा किया है, और यह अज़ीम कामयाबी है। (111)

التَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ

रुकूअ़ करने वाले	सफ़र करने वाले	हम्द ओ सना करने वाले	इबादत करने वाले	तौबा करने वाले

السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

बुराई	से	और रोकने वाले	नेकी का	हुक्म देने वाले	सिज्दा करने वाले

وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ مَا كَانَ

नहीं है	112	मोमिन (जमा)	और ख़ुशख़बरी दो	अल्लाह की हुदूद की	और हिफ़ाज़त करने वाले

لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ

मुश्रिकों के लिए	वह बख़्शिश चाहें	कि	और जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	नबी के लिए

وَلَوْ كَانُوْۤا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ

कि वह	उन पर	जब ज़ाहिर हो गया	उस के बाद	क़राबतदार	वह हों	ख़्वाह

اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۳﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

अपने बाप के लिए	इब्राहीम (अ)	बख़्शिश चाहना	और न था	113	दोज़ख़ वाले

اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ

कि वह	उस पर	ज़ाहिर हो गया	फिर जब	उस से	जो उस ने वादा किया	एक वादे के सबब	मगर

عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं है	114	बुर्दबार	नर्म दिल	इब्राहीम (अ)	बेशक	उस से	वह बेज़ार हो गया	अल्लाह का दुश्मन

لِيُضِلَّ قَوْمًاۢ بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ

उन पर	वाज़ेह करदे	जब तक	जब उन्हें हिदायत दे दी	बाद	कोई क़ौम	कि वह गुमराह करे

مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ

बादशाहत	उस के लिए	बेशक अल्लाह	115	जानने वाला	हर शै का	बेशक अल्लाह	वह परहेज़ करें	जिस

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ

और तुम्हारे लिए नहीं	और वह मारता है	वही ज़िन्दगी देता है	और ज़मीन	आस्मानों

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى

पर	अल्लाह	अल्बत्ता तवज्जुह फ़रमाई	116	और न मददगार	कोई हिमायती	से	अल्लाह के सिवा	कोई

النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ

में	उस की पैरवी की	वह जिन्हों ने	और अन्सार	और मुहाजरीन	नबी (स)

سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ

एक फ़रीक़	दिल (जमा)	फिर जाएं	जब क़रीब था	उस के बाद	तंगी	घड़ी

مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

117	निहायत मेह्रबान	इन्तिहाई शफ़ीक़	उन पर	बेशक वह	उन पर	फिर वह मुतवज्जुह हुआ	उन से

तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द ओ सना करने वाले, (अल्लाह की राहे में) सफ़र करने वाले, रुकूअ़ करने वाले, सिज्दा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की (क़ाइम करदा) हुदूद की हिफ़ाज़त करने वाले, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दो। **(112)**
नबी (स) के लिए और मोमिनों के लिए (शायां) नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए बख़्शिश चाहें, अगरचे वह उन के क़राबतदार हों, उस के बाद जब कि उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह दोज़ख़ वाले हैं। **(113)**
और इब्राहीम (अ) का अपने बाप के लिए बख़्शिश चाहना न था मगर एक वादे के सबब जो वह उस (बाप) से कर चुके थे, फिर जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उस से बेज़ार हो गए, बेशक इब्राहीम (अ) नर्म दिल बुर्दबार थे। **(114)**
और अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी को उस के बाद गुमराह करे, जबकि उस ने उन्हें हिदायत दे दी जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे जिस से वह परहेज़ करें, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। **(115)**
बेशक अल्लाह ही के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, वह ज़िन्दगी देता है और (वही) मारता है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हीमायती है और न मददगार। **(116)**
अलबत्ता तवज्जुह फ़रमाई अल्लाह ने नबी (स) पर, और मुहाजरीन ओ अन्सार पर, वह जिन्हों ने तंगी की घड़ी में उस की पैरवी की, उस के बाद जबकि क़रीब था कि उन में से एक फ़रीक़ के दिल फिर जाएं, फिर वह उन पर मुतवज्जुह हुआ, बेशक वह उन पर इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत मेह्रबान है। **(117)**

وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ

उन पर	तंग होगई	जब	यहां तक कि	पीछे रखा गया	वह जो	वह तीन	और पर

الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ

कि	और उन्हों ने जान लिया	उन की जानें	उन पर	और वह तंग हो गई	बावजूद कुशादगी	ज़मीन

لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ

ताकि वह तौबा करें	वह मुतवज्जुह हुआ उन पर	फिर	उस की तरफ़	मगर	अल्लाह	से	नहीं पनाह

ع ١٤ ٨ ٣ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ

डरो अल्लाह से	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	118	निहायत मेहरबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	वह	बेशक अल्लाह

وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ

और जो	मदीने वालों को	न था	119	सच्चे लोग	साथ	और हो जाओ

حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ

अल्लाह के रसूल (स)	से	कि वह पीछे रहजाते	देहातियों में से	उन के इर्द गिर्द

وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ

नहीं पहुँचती उन को	इस लिए कि वह	यह	उन की जान	से	अपनी जानों को	और यह कि ज़ियादा चाहें वह

ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَئُوْنَ

और न वह क़दम रखते हैं	अल्लाह की राह	में	कोई भूख	और न	और न कोई मुशक़्क़त	कोई पयास

مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا

मगर	कोई चीज़	दुश्मन	से	और न वह छीनते हैं	काफ़िर (जमा)	गुस्सा हों	ऐसा क़दम

كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾

120	नेकोकार (जमा)	अजर	ज़ाया नहीं करता	बेशक अल्लाह	नेक अ़मल	उस से	लिखा जाता है उन के लिए

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ

और न तै करते हैं	और न बड़ा	छोटा	ख़र्च	वह ख़र्च करते हैं	और न

وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا

जो	बेहतरीन	अल्लाह	ताकि जज़ा दे उन्हें	लिखा जाता है उन के लिए	मगर	कोई वादी (मैदान)

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ

पस क्यों न कूच करे	सब के सब	कि वह कूच करें	मोमिन (जमा)	और नहीं है	121	वह करते थे (उन के आमाल)

مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ

दीन में	ताकि वह समझ हसिल करें	एक जमाअ़त	उन से (उन की)	हर गिरोह	से

ع ١٥ ٩ ٤ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

122	बचते रहें	ताकि वह (अ़जब नहीं)	उन की तरफ़	वह लौटें	जब	अपनी क़ौम	और ताकि वह डर सुनाएं

और उन तीन पर (जिन का मामला) पीछे रखा गया था, यहां तक कि उन पर तंग होगई ज़मीन अपनी कुशादगी के बावजूद, और उन पर उन की जानें तंग हो गईं (अपनी जानों से तंग आगए) और उन्हों ने जान लिया कि अल्लाह से कोई पनाह नहीं मगर उसी कि तरफ़ है, फिर वह उन पर (अपनी रहमत से) मुतवज्जुह हुआ ताकि वह तौबा करें, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (118)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ। (119)

(लाइक़) न था मदीने वालों को (और उन्हें) जो उन के इर्द गिर्द देहाती हैं कि वह अल्लाह के रसूल (स) से पीछे रहजाएं, और यह कि वह ज़ियादा चाहें अपनी जानों को उन (स) की जान से, यह इस लिए कि उन को नहीं पहुँचती कोई प्यास, और न कोई मुशक़्क़त, और न कोई भूख, अल्लाह की राह में, और न वह ऐसा क़दम रखते हों कि काफ़िर गुस्सा हों और न वह छीनते हैं दुश्मन से कोई चीज़, मगर उस से (उस के बदले) उन के लिए नेक अ़मल लिखा जाता है, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकोकारों का। (120)

और वह कोई छोटा या बड़ा (कम या ज़ियादा) ख़र्च नहीं करते और न वह तै करते हैं कोई मैदान, मगर उन के लिए लिख दिया जाता है, ताकि अल्लाह उन के आमाल की उन्हें बेहतरीन जज़ा दे। (121)

और (ऐसे तो) नहीं कि मोमिन सब के सब कूच करें। पस क्यों न उन के हर गिरोह में से एक जमाअ़त कूच करे ताकि वह समझ हासिल करें दीन में, और ताकि वह अपनी क़ौम को डर सुनाएं जब उन की तरफ़ लौटें, अ़जब नहीं कि वह बचते रहें। (122)

ऐ मोमिनों! अपने नज़दीक के काफ़िरों से लड़ो, और चाहीए कि वह तुम्हारे अन्दर पाएं सख़्ती, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (123)

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो उन में से बाज़ कहते हैं उस ने तुम में से किस का ईमान ज़ियादा कर दिया है? सो जो लोग ईमान लाए हैं उस ने ज़ियादा कर दिया है उन का ईमान, और वह खुशियां मनाते हैं, (124)

और वह लोग जिन के दिलों में बीमारी है, उस ने ज़ियादा कर दी उन की गन्दगी पर गन्दगी, और वह मरने तक काफ़िर ही रहे। (125)

क्या वह नहीं देखते कि वह हर साल आज़माए जाते हैं? एक बार या दो बार, फिर न वह तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। (126)

और जब उतारी जाती है कोई सूरत तो उन में से एक दूसरे को देखने लगता है, क्या तुम्हें कोई (मुसलमान) देखता है? फिर वह फिर जाते हैं, अल्लाह ने उन के दिल फेर दिए, क्योंकि वह लोग समझ नहीं रखते। (127)

अलबत्ता तुम्हारे पास आया एक रसूल (स) तुम में से, जो तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचे उस पर गरां है, तुम्हारी (भलाई) का बहुत ख़ाहिशमन्द है, मोमिनों पर शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। (128)

फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो आप (स) कह दें मुझे काफ़ी है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और वह अर्शे अज़ीम का मालिक है। (129)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ

नज़दीक तुम्हारे	वह जो	लड़ो	वह जो ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	और जान लो	सख़्ती	तुम्हारे अन्दर	और चाहीए कि वह पाएं	कुफ़्फ़ार से (काफ़िर)

مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ

कहते हैं	बाज़	तो उन में से	कोई सूरत	नाज़िल की जाती	और जब	123	परहेज़गारों के साथ

اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

वह लोग जो ईमान लाए	सो जो	ईमान	उस ने	ज़ियादा कर दिया (उस का)	तुम में से किस

فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاَمَّا

और जो	124	खुशियां मनाते हैं	और वह	ईमान	उस ने ज़ियादा कर दिया उन का

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى

तरफ़ (पर)	गन्दगी	उस ने ज़ियादा कर दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में	वह लोग जो

رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ

क्या नहीं वह देखते	125	काफ़िर (जमा)	और वह	और वह मरे	उन की गन्दगी

اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ

फिर	दो बार	या	एक बार	हर साल में	आज़माए जाते हैं	कि वह

لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ

कोई सूरत	और उतारी जाती है	और जब	126	नसीहत पकड़ते हैं	वह	और न	न वह तौबा करते हैं

نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ

फिर	कोई	देखता है तुम्हें	क्या	बाज़ (दूसरे)	को	उन में से (कोई एक)	देखता है

انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

लोग	क्योंकि वह	उन के दिल	अल्लाह	फेर दिए	वह फिर जाते हैं

لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ

गरां	तुम्हारी जानें (तुम)	से	एक रसूल (स)	अलबत्ता तुम्हारे पास आया	127	समझ नहीं रखते

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ

इन्तिहाई शफ़ीक़	मोमिनों पर	तुम पर	हरीस (बहुत ख़ाहिशमन्द)	तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचे	जो	उस पर

رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	अल्लाह	मुझे काफ़ी है	तो कह दें	फिर अगर वह मुंह मोड़ें	128	निहायत मेहरबान

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

129	अज़ीम	अर्श	मालिक	और वह	मैं ने भरोसा किया	उस पर

المنزل ٣

آياتها ١٠٩ ❀ سُوْرَةُ يُوْنُسَ (١٠) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١١

रुकूआत 11	(10) सूरह यूनुस यूनुस (अ)	आयात 109

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝١ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ

हम ने वहि भेजी	कि	तअ़ज्जुब	लोगों को	क्या हुआ	1	हिक्मत वाली	किताब	आयतें	यह	अलिफ़ लाम रा

اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	कि	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	और ख़ुशख़बरी दे	लोग	वह डराए	कि	उन से	एक आदमी	तरफ़-पर

وقف النبي ﷺ

قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

2	खुला	जादूगर	यह	बेशक	काफ़िर (जमा)	बोले	उन का रब	पास	सच्चा	पाया

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

दिन	छः (6)	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	वह जिस ने	अल्लाह	बेशक तुम्हारा रब

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا

मगर	सिफ़ारिशी	कोई	नहीं	काम	तदबीर करता है	अर्श पर	क़ाइम हुआ	फिर

مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ اِلَيْهِ

उसी की तरफ़	3	सो क्या तुम ध्यान नहीं करते	पस उस की बन्दगी करो	तुम्हारा रब	अल्लाह	वह है	उस की इजाज़त	बाद

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

दोबारा पैदा करेगा	फिर	पहली बार पैदा करता है	बेशक वही	सच्चा	अल्लाह	वादा	सब	तुम्हारा लौट कर जाना

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और वह लोग जो	इन्साफ़ के साथ	नेक (जमा)	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	वह लोग जो	ताकि जज़ा दे

لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤

4	वह कुफ़्र करते थे	क्योंकि	दर्दनाक	और अ़ज़ाब	खौलता हुआ	से	पीना है (पानी)	उन के लिए

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ

मन्ज़िलें	और मुक़र्रर कर दीं उस की	नूर (चमकता)	और चाँद	जगमगाता	सूरज	बनाया	जिस ने	वह

لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ

हक़ (दुरुस्त तदबीर) से	मगर	यह	अल्लाह	नहीं पैदा किया	और हिसाब	बरस (जमा)	गिनती	ताकि तुम जान लो

يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

और दिन	रात	बदलना	में	बेशक	5	इल्म वालों के लिए	निशानियां	वह खोल कर बयान करता है

وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦

6	परहेज़गारों के लिए	निशानियां हैं	और ज़मीन	आस्मानों में	अल्लाह ने पैदा किया	और जो

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं। (1) क्या लोगों को तअ़ज्जुब हुआ? कि हम ने वहि भेजी एक आदमी पर उन में से कि वह लोगों को डराए, और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे कि उन के लिए सच्चा पाया (मक़ाम) है उन के रब के पास। काफ़िर बोले बेशक यह तो खुला जादूगर है। (2)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है, जिस ने पैदा किया छः (6) दिनों में आस्मानों को और ज़मीन को, फिर वह अर्श पर क़ाइम हुआ, काम की तदबीर करता है, कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद, वह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस उस की बन्दगी करो, सो क्या तुम ध्यान नहीं देते? (3)

उस की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है, बेशक वही पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि उन लोगों को इन्साफ़ के साथ जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए खौलता हुआ पानी है और दर्दनाक अ़ज़ाब है, क्योंकि वह कुफ़्र करते थे। (4)

वही है जिस ने सूरज को जगमगाता और चाँद को चमकता बनाया और उस की मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम बरसों की गिनती जान लो और हिसाब, अल्लाह ने यह नहीं पैदा किया मगर दुरुस्त तदबीर से, वह इल्म वालों के लिए निशानियां खोल कर बयान करता है। (5)

बेशक रात और दिन के बदलने में, और जो अल्लाह ने आस्मानों में और ज़मीन में पैदा किया (उस में) निशानियां हैं परहेज़गारों के लिए। (6)

بेशक जो लोग हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए और उस पर मुत्मइन हो गए, और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं, (7)

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (8)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, उन का रब उन्हें राह दिखाएगा उन के ईमान की बदौलत (ऐसे महलात की) जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, नेमत के बाग़ात में। (9)

उस में उन की दुआ़ (हो गी) ऐ अल्लाह! तू पाक है, और उस में उन की वक़्ते मुलाक़ात की दुआ़ "सलाम" है, और उन की दुआ़ का ख़ातिमा है तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है। (10)

और अगर अल्लाह लोगों को जल्द बुराई भेजता जैसे वह जल्द भलाई चाहते हैं तो पूरी हो चुकी होती उन की उम्र की मीआ़द, पस हम उन लोगों को जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते सरकशी में बहकते छोड़ देते हैं। (11)

और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह लेटा हुआ, और बैठा हुआ, और खड़ा हुआ हमें पुकारता है, फिर जब हम दूर कर दें उस से उस की तक्लीफ़, (यूँ) चल पड़ा गोया कि किसी तक्लीफ़ में जो उसे पहुँची, उस ने हमें पुकारा ही न था, उसी तरह हद से बढ़ने वालों को भला कर दिखाया वह काम जो वह करते थे। (12)

और हम ने तुम से पहले कई उम्मतें हलाक कर दीं जब उन्हों ने ज़ुल्म किया, और उन के पास आए उन के रसूल खुली निशानियों के साथ, और वह ईमान न लाते थे, उसी तरह हम मुज्रिमों की क़ौम को बदला देते हैं। (13)

फिर हम ने तुम्हें ज़मीन में उन के बाद जानशीन बनाया ताकि हम देखें तुम कैसे काम करते हो। (14)

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी पर	और वह राज़ी हो गए	हमारा मिलना	उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	बेशक

وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۙ﴿٧﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	7	ग़ाफ़िल (जमा)	हमारी आयात	से	वह	और जो लोग	उस पर	और वह मुत्मइन हो गए

مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	बेशक	8	वह कमाते थे	उस का बदला जो	जहन्नम	उन का ठिकाना

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ

उन के नीचे	से	बहती होंगी	उन के ईमान की बदौलत	उन का रब	उन्हें राह दिखाएगा	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٩﴾ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ

ऐ अल्लाह	पाक है तू	उस में	उन की दुआ़	9	नेमत	बाग़ात	में	नहरें

وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	कि	उन की दुआ़	और ख़ातिमा	सलाम	उस में	और मुलाक़ात के वक़्त की दुआ़

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ ع ١٠ ٦

भलाई	जल्द चाहते हैं	बुराई	लोगों को	अल्लाह	जल्द भेज देता	और अगर	10	सारे जहान

لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ

में	हमारी मुलाक़ात	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	पस हम छोड़ देते हैं	उन की उम्र की मीआ़द	उन की तरफ़	तो फिर हो चुकी होती

طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا

वह हमें पुकारता है	कोई तक्लीफ़	इन्सान	पहुँचती है	और जब	11	वह बहकते हैं	उन की सरकशी

لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ

चल पड़ा	उस की तक्लीफ़	उस से	हम दूर कर दें	फिर जब	खड़ा हुआ	या (और)	बैठा हुआ	या (और)	अपने पहलू पर (लेटा हुआ)

كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ

हद से बढ़ने वालों को	भला कर दिखाया	उसी तरह	उसे पहुँची	तक्लीफ़	किसी	हमें पुकारा न था	गोया कि

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	से	उम्मतें	और हम ने हलाक कर दीं	12	वह करते थे (उन के काम)	जो

لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا

और न	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	उन्हों ने ज़ुल्म किया	जब

كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ

हम ने बनाया तुम्हें	फिर	13	मुज्रिमों की	क़ौम	हम बदला देते हैं	उसी तरह	ईमान लाते थे

خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

14	तुम काम करते हो	कैसे	ताकि हम देखें	उन के बाद	ज़मीन में	जानशीन

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ

और जब	पढ़ी जाती हैं	उन पर (उन के सामने)	हमारी आयात	वाज़ेह	कहते हैं	वह लोग जो	उम्मीद नहीं रखते

لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ

हम से मिलने की	तुम ले आओ	कोई क़ुरआन	इस के अ़लावा	या	बदलदो इसे	आप कह दें	नहीं है	मेरे लिए

اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ

कि	उसे बदलूं	से	जानिब	अपनी	मैं नहीं पैरवी करता	मगर जो	वहि की जाती है	मेरी तरफ़

اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ

बेशक मैं	डरता हूँ	अगर	मैं ने नाफ़रमानी की	अपना रब	अ़ज़ाब	दिन	बड़ा	15	आप कह दें

لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۫ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ

अगर चाहता अल्लाह	न पढ़ता मैं उसे	तुम पर	और न ख़बर देता तुम्हें	उस की	तहक़ीक़ मैं रह चुका हूँ

فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

तुम में	एक उम्र	इस से पहले	सो क्या न	अ़क्ल से काम लेते तुम	16	सो कौन	बड़ा ज़ालिम	उस से जो

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

बान्धे	अल्लाह पर	झूट	या झुटलाए	उस की आयतों को	बेशक वह	फ़लाह नहीं पाते

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ

मुज्रिम (जमा)	17	और वह पूजते हैं	से	अल्लाह के सिवा	जो	न ज़रर पहुंचा सके उन्हें

وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

और न नफ़ा दे सके उन्हें	और वह कहते हैं	यह सब	हमारे सिफ़ारिशी	अल्लाह के पास

قُلْ اَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ

आप (स) कह दें	क्या तुम ख़बर देते हो	अल्लाह	उस की जो	वह नहीं जानता	आस्मानों में	और न	में	ज़मीन

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ

वह पाक है	और बालातर	उस से जो	वह शिर्क करते हैं	18	और न थे	लोग

اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

मगर	उम्मते वाहिद	फिर उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया	और अगर न	बात	पहले हो चुकी	से

رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

तेरा रब	तो फ़ैसला हो जाता	उन के दरमियान	उस में जो	उस में	वह इख़्तिलाफ़ करते हैं	19	और वह कहते हैं

لَوْ لَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا

क्यों न उतरी	उस पर	कोई निशानी	उस के रब से	तो कह दें	इस के सिवा नहीं

ع ٢ ١٠ الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾

ग़ैब	अल्लाह के लिए	सो तुम इन्तिज़ार करो	मैं	तुम्हारे साथ	से	इन्तिज़ार करने वाले	20

और जब पढ़ी जाती हैं उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतें, तो जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते वह कहते हैं, उस के अ़लावा तुम कोई और क़ुरआन ले आओ या उसे बदल दो, आप (स) कह दें मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं अपनी जानिब से बदलूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (15)

आप (स) कह दें अगर अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर (तुम्हारे सामने) न पढ़ता, और न तुम्हें उस की ख़बर देता, मैं उस से पहले तुम में एक उम्र रह चुका हूँ, सो क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते? (16)

सो उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह पर झूट बान्धे या उस की आयतों को झुटलाए, बेशक मुजरिम फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाते, (17)

और वह अल्लाह के सिवा उन्हें पूजते हैं जो उन्हें न ज़रर पहुँचा सकें और न नफ़ा दे सकें, और वह कहते हैं यह सब अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारशी हैं। आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह को उस की ख़बर देते हो जो वह नहीं जानता आस्मानों में और न ज़मीन में, वह पाक है और वह बालातर है उस से जो वह शिर्क करते हैं। (18)

और लोग न थे मगर उम्मते वाहिद, फिर उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले बात न हो चुकी होती तो फ़ैसला हो जाता उन के दरमियान (उस बात का) जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं। (19)

और वह कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? तो आप (स) कह दें उस के सिवा नहीं कि ग़ैब अल्लाह के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (20)

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ

हीला	उन के लिए	उसी वक़्त	उन्हें पहुँची	तक्लीफ़	बाद	रहमत	लोग	हम चखाएं	और जब

فِىْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	जो तुम हीले साज़ी करते हो	वह लिखते हैं	हमारे फ़रिश्ते	बेशक	खुफ़िया तदबीर	सब से जल्द	अल्लाह	आप (स) कह दें	हमारी आयात	में

هُوَ الَّذِىْ يُسَيِّرُكُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِى الْفُلْكِ ۚ

कश्ती में	तुम हो	जब	यहां तक	और दर्या	खुश्की में	तुम्हें चलाता है	जो कि	वही

وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ

तुन्द ओ तेज़	एक हवा	उस पर आई	उस से	और वह खुश हुए	पाकीज़ा	हवा के साथ	उन के साथ	और वह चलें

وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا

वह पुकारने लगे	उन्हें	घेर लिया गया	कि वह	और उन्हों ने जान लिया	हर जगह (हर तरफ़)	से	मौज	और उन पर आई

اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ

तो हम ज़रूर होंगे	उस	से	तू नजात दे हमें	अलबत्ता अगर	दीन (बन्दगी)	उस के	ख़ालिस हो कर	अल्लाह

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ

नाहक़	ज़मीन	में	सरकशी करने लगे	वह	उस वक़्त	उन्हें नजात दे दी	फिर जब	22	शुक्रगुज़ार (जमा)	से

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ

दुनिया	ज़िन्दगी	फ़ाइदे	तुम्हारी जानों	पर	तुम्हारी शरारत	इस के सिवा नहीं	ऐ लोगो

ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ

मिसाल	इस के सिवा नहीं	23	तुम करते थे	वह जो	फिर हम बतला देंगे तुम्हें	तुम्हें लौटना	हमारी तरफ़	फिर

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ

ज़मीन का सब्ज़ा	उस से	तो मिला जुला निकला	आस्मान से	हम ने उसे उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी

مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ

ज़मीन	पकड़ ली	जब	यहां तक कि	और चौपाए	लोग	खाते हैं	जिस से

زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ

आया	उस पर	कुदरत रखते हैं	कि वह	ज़मीन वाले	और ख़याल किया	और मुज़ैयन हो गई	अपनी रौनक़

اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ

वह न थी	गोया कि	कटा हुआ ढेर	तो हम ने कर दिया	या दिन के वक़्त	रात में	हमारा हुक्म

بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	24	जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	कल

يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

25	सीधा	रास्ता	तरफ़	जिसे वह चाहे	और हिदायत देता है	सलामती का घर	तरफ़	बुलाता है

और जब हम चखाएं लोगों को रहमत (का मज़ा) एक तक्लीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी तो उसी वक़्त वह हमारी आयात में हीले (बनाने लगें) आप (स) कह दें अल्लाह सब से तेज़ खुफ़िया तदबीर (बना सकता है), बेशक तुम जो हीले साज़ी करते हो हमारे फ़रिश्ते लिखते हैं। (21)

वही है जो तुम्हें चलाता है खुश्की में और दर्या में, यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो, और वह उन के साथ (उन्हें ले कर) पाकीज़ा हवा के साथ चलें, और वह उस से खुश हुए, उस (कश्ती) पर एक तुन्द ओ तेज़ हवा आई, और उन पर हर तरफ़ से मौजें आगईं, और उन्हों ने जान लिया कि उन्हें घेर लिया गया है, वह अल्लाह को पुकारने लगे उस की बन्दगी में ख़ालिस हो कर, कि अगर तू ने हमें इस से नजात दे दी तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ारों में से होंगे। (22)

फिर जब उस ने उन्हें नजात दे दी उस वक़्त वह ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगे, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि तुम्हारी शरारत (का वबाल) तुम्हारी जानों पर है, दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ाइदे (चन्द रोज़ा हैं) फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना है फिर हम तुम्हें बतला देंगे जो तुम करते थे। (23)

इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी जैसी है, हम ने उसे आस्मान से उतारा तो उस से ज़मीन का सब्ज़ह मिला जुला निकला, जिस से लोग और चौपाए खाते हैं, यहां तक कि जब ज़मीन ने अपनी रौनक़ पकड़ ली, और वह मुज़ैयन हो गई, और ज़मीन वालों ने ख़याल किया कि वह उस पर कुदरत रखते हैं तो (अचानक) हमारा हुक्म रात में या दिन के वक़्त आया, तो हम ने उसे कटा हुआ ढेर कर दिया गोया वह कल थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है। और जिसे चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (25)

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ

और न ज़िल्लत	सियाही	उन के चहरे	और न चढ़ेगी	और ज़ियादा	भलाई है	उन्हों ने भलाई की	वह लोग जो कि

اُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا

उन्हों ने कमाईं	और वह लोग जो	26	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जन्नत वाले	वही लोग

السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह	से	उन के लिए नहीं	ज़िल्लत	और उन पर चढ़ेगी	उस जैसा	बुराई	बदला	बुराइयां

مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ

तारीक	रात	से	टुकड़े	उन के चहरे	ढांक दिए गए	गोया कि	बचाने वाला	कोई

اُولٰٓـئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ

हम इकटठा करेंगे उन्हें	और जिस दिन	27	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जहन्नम वाले	वही लोग

جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ

और तुम्हारे शरीक	तुम	अपनी जगह	जिन्हों ने शिर्क किया	उन लोगों को	हम कहेंगे	फिर	सब

فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	बन्दगी करते	हमारी	तुम न थे	उन के शरीक	और कहेंगे	उन के दरमियान	फिर हम जुदाई डाल देंगे

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ

तुम्हारी बन्दगी	से	हम थे	कि	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	गवाह	अल्लाह	पस काफ़ी

لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़	और वह लौटाए जाएंगे	उस ने भेजा	जो	हर कोई	जांच लेगा	वहां	29	अलबत्ता बेख़बर (जमा)

ع ١٠ ٣ النصف ٨

مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ

कौन	आप (स) पूछें	30	वह झूट बान्धते थे	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	सच्चा	उन का (अपना) मौला

يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

और आँखें	कान	मालिक है	या कौन	और ज़मीन	आस्मान	से	रिज़्क़ देता है तुम्हें

وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ

तदबीर करता है काम	और कौन	ज़िन्दा	से	मुर्दा	और निकालता है	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है	और कौन

فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ

सच्चा	तुम्हारा रब	अल्लाह	पस यह है तुम्हारा	31	क्या फिर तुम नहीं डरते	आप कह दें	अल्लाह	सो वह बोल उठेंगे

فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ

उसी तरह	32	तुम फिरे जाते हो	पस किधर	गुमराही	सिवाए	सच के बाद	फिर क्या रह गया

حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

33	ईमान न लाएंगे	कि वह	उन्हों ने नाफ़रमानी की	वह लोग जो	पर	तेरा रब	बात	सच्ची हुई

जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और (उस से भी) ज़ियादा, और उन के चहरों पर न सियाही चढ़ेगी और न ज़िल्लत, वही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (26)

और जिन लोगों ने बुराइयां कमाईं (उन का) बदला उस जैसी बुराई है, और उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी, उन के लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं, गोया उन के चहरे ढांक दिए गए तारीक रात के टुकड़े से, वही लोग जहन्नम वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (27)

और जिस दिन हम उन सब को इकटठा करेंगे फिर उन लोगों को कहेंगे जिन्हों ने शिर्क किया अपनी अपनी जगह (रहो) तुम और तुम्हारे शरीक, फिर हम उन के दरमियान जुदाई डाल देंगे, और उन के शरीक कहेंगे, तुम हमारी बन्दगी न करते थे। (28)

पस हमारे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी है अल्लाह गवाह, कि हम तुम्हारी बन्दगी से बेख़बर थे। (29)

वहां हर कोई जांच लेगा जो उस ने आगे भेजा था और वह अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे और उन से गुम हो जाएगा जो वह झूट बान्धते थे। (30)

आप (स) पूछें कौन आस्मान और ज़मीन से तुम्हें रिज़्क़ देता है? या कौन कान और आँखों का मालिक है? और कौन ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है? और निकालता है मुर्दे को ज़िन्दा से? और कौन कामों की तदबीर करता है? सो वह बोल उठेंगे, अल्लाह! आप (स) कहदें क्या फिर तुम डरते नहीं? (31)

पस यह है अल्लाह! तुम्हारा सच्चा रब, सच के बाद गुमराही के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिरे जाते हो? (32)

उसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर जिन्हों ने नाफ़रमानी की, सच्ची हुई कि वह ईमान न लाएंगे, (33)

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ

अल्लाह	आप (स) कह दें	फिर उसे लौटाए	मख़्लूक़	पहली बार पैदा करे	जो	तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप (स) पूछें

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ

तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप(स) पूछें	34	पलटे जाते हो तुम	पस किधर	उसे लौटाएगा	फिर	मख़्लूक़	पहली बार पैदा करता है

مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ

राह बताता है	पस क्या जो	सहीह	राह बताता है	अल्लाह	आप कहदें	हक़ की तरफ़ (सहीह)	राह बताए	जो

اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟

सो तुम्हें क्या हुआ	उसे राह दिखाई जाए	यह कि	मगर	वह राह नहीं पाता	या जो	पैरवी की जाए	कि	ज़ियादा हक़ दार	हक़ की तरफ़ (सही)

كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ

नहीं काम देता	गुमान	बेशक	मगर गुमान	उन के अक्सर	और पैरवी नहीं करते	35	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा

مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا

यह-इस	और नहीं है	36	वह करते हैं	वह जो	ख़ूब जानता है	बेशक अल्लाह	कुछ भी	हक़	से (का)

الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ

उस की जो	तस्दीक़	और लेकिन	अल्लाह के बग़ैर	से	कि वह बनाले	क़ुरआन

بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾ ۟

37	तमाम जहानों	रब	से	उस में	कोई शक नहीं	किताब	और तफ़सील	उस से पहले

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ

जिसे	और बुला लो तुम	उस जैसी	एक ही सूरत	पस ले आओ तुम	आप (स) कह दें	वह उसे बना लाया है	वह कहते हैं	क्या

اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	बल्कि	38	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह के सिवा	से	तुम बुला सको

بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ

झुटलाया	उसी तरह	उस की हक़ीक़त	उन के पास आई	और अभी नहीं	उस के इल्म पर	नहीं क़ाबू पाया	वह जो

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾

39	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	पस आप (स) देखें	उन से पहले	वह लोग जो

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ

ख़ूब जानता है	और तेरा रब	उस पर	नहीं ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से	उस पर	ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से

بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ ع ٤ ٩

तुम्हारे अ़मल	और तुम्हारे लिए	मेरे अ़मल	मेरे लिए	तो कह दें	वह तुम्हें झुटलाएं	और अगर	40	फ़साद करने वालों को

اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾

41	तुम करते हो	उस का जो	जवाबदेह नहीं	और मैं	मैं करता हूँ	उस के जो	जवाबदेह नहीं	तुम

आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई है? जो पहली बार पैदा करे फिर उसे लौटाए, आप(स) कह दें अल्लाह पहली बार पैदा करता है फिर उसे लौटाएगा, पस तुम किधर पलटे जाते हो? **(34)**
आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई) है जो सहीह राह बताए? आप (स) कह दें अल्लाह सहीह राह बताता है, क्या जो सहीह राह बताता है ज़ियादा हक़दार है कि उस की पैरवी की जाए? या वह जो (ख़ुद भी) राह नहीं पाता मगर यह कि उसे राह दिखाई जाए, सो तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो? **(35)**
और उन में से अक्सर पैरवी नहीं करते मगर गुमान की, बेशक गुमान हक़ (की मुआ़रिफ़त) का कुछ भी काम नहीं देता, बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह करते हैं। **(36)**
और यह क़ुरआन (ऐसा) नहीं कि कोई अल्लाह के (हुक्म के) बग़ैर (अपनी तरफ़ से) बना ले, लेकिन उस की तस्दीक़ करने वाला है जो उस से पहले (नाज़िल हुआ) और किताब की तफ़सील है, उस में कोई शक नहीं कि यह तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से है। **(37)**
क्या वह कहते हैं? कि वह उसे बना लाया है, आप (स) कह दें पस उस जैसी एक ही सूरत ले आओ और जिसे तुम बुला सको, बुला लो, अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। **(38)**
बल्कि उन्हों ने उसे झुटलाया जिस के इल्म पर उन्हों ने क़ाबू नहीं पाया, और उस की हक़ीक़त अभी उन के पास नहीं आई, उसी तरह उन से पहलों ने झुटलाया, पस आप (स) देखें कैसा हुआ ज़ालिमों का अन्जाम? **(39)**
और उन में से बाज़ उस पर ईमान लाएंगे, और उन में से बाज़ उस पर ईमान न लाएंगे, और तेरा रब फ़साद करने वालों को ख़ूब जानता है। **(40)**
और अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कह दें मेरे लिए मेरे अ़मल, और तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल, तुम उस के जवाबदह नहीं जो मैं करता हूँ, और मैं उस का जवाबदह नहीं जो तुम करते हो। **(41)**

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ

ख़्वाह	बहरे	सुनाओगे	तो क्या तुम	आप (स) की तरफ़	कान लगाते हैं	जो (बाज़)	और उन में से

كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْىَ

अन्धे	राह दिखा दोगे	पस क्या तुम	आप (स) की तरफ़	देखते हैं	जो (बाज़)	और उन से	42	वह अक़्ल न रखते हों

وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ

और लेकिन	कुछ भी	लोग	ज़ुल्म नहीं करता	बेशक अल्लाह	43	वह देखते न हों	ख़्वाह

النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا

मगर	वह न रहे थे	गोया	जमा करेगा उन्हें	और जिस दिन	44	ज़ुल्म करते हैं	अपने आप पर	लोग

سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	वह लोग	अलबत्ता ख़सारे में रहे	आपस में	वह पहचानेंगे	दिन से (की)	एक घड़ी

بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ

वह जो	बाज़ (कुछ)	हम तुझे दिखा दें	और अगर	45	हिदायत पाने वाले	वह न थे	अल्लाह से मिलने को

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى

पर	गवाह	अल्लाह	फिर	उन का लौटना	पस हमारी तरफ़	हम तुम्हें उठा लें	या	वादा करते हैं हम उन से

مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِىَ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला कर दिया गया	उन का रसूल	आगया	पस जब	रसूल	उम्मत	और हर एक के लिए	46	जो वह करते हैं

بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ

अगर	वादा	यह	कब	और वह कहते हैं	47	ज़ुल्म नहीं किए जाते	और वह	इन्साफ़ के साथ

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا

जो	मगर	और न नफ़ा	किसी नुक़्सान	अपनी जान के लिए	नहीं मालिक हूँ मैं	आप कह दें	48	सच्चे	तुम हो

شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً

एक घड़ी	पस न ताख़ीर करेंगे वह	उन का वक़्त	आजाएगा	जब	एक वक़्त मुक़र्रर	हर एक उम्मत के लिए	चाहे अल्लाह

وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

या दिन के वक़्त	रात को	उस का अज़ाब	अगर तुम पर आए	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	49	जल्दी करेंगे वह	और न

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ

उस पर	तुम ईमान लाओगे	वाक़े होगा	जब	क्या फिर	50	मुज्रिम (जमा)	उस से - उस की	जल्दी करते हैं	क्या है वह

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	उन लोगों को जो	कहा जाएगा	फिर	51	तुम जल्दी मचाते	उस की	और अलबत्ता तुम थे	अब

ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	तुम कमाते थे	वह जो	मगर	तुम्हें बदला दिया जाता	क्या नहीं	हमेशगी	अज़ाब	तुम चखो

और उन में से बाज़ कान लगाते हैं आप (स) की तरफ़, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे? अगरचे वह अक़्ल न रखते हों। (42)
और उन में से बाज़ देखते हैं आप(स) की तरफ़, तो क्या आप(स) अन्धों को राह दिखा देंगे? अगरचे वह देखते न हों। (43)
बेशक अल्लाह ज़ुल्म नहीं करता लोगों पर कुछ भी, लेकिन लोग अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं। (44)
और जिस दिन (योमे हश्र) वह उन्हें जमा करेगा गोया वह (दुनिया में) न रहे थे मगर दिन की एक घड़ी, आपस में पहचानेंगे, अलबत्ता वह ख़सारे में रहे जिन्हों ने झुटलाया अल्लाह से मिलने को, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (45)
और अगर हम तुम्हें बाज़ वादे दिखा दें जो हम उन से कर रहे हैं या हम तुम्हें (दुनिया से) उठा लें, पस उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह उस पर गवाह है जो वह करते हैं। (46)
हर एक उम्मत के लिए एक रसूल है, पस जब उन का रसूल आगया, उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाता। (47)
और वह कहते हैं यह वादा कब (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो। (48)
आप (स) कह दें मैं अपनी जान के लिए मालिक नहीं हूँ किसी नुक़्सान का न नफ़ा का, मगर जो अल्लाह चाहे, हर एक उम्मत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, जब उन का वक़्त आजाएगा पस न वह एक घड़ी ताख़ीर करेंगे न जल्दी कर सकेंगे। (49)
आप (स) कह दें भला तुम देखो अगर तुम पर उस का अज़ाब आए रात को या दिन के वक़्त, तो वह क्या है जिस की मुज्रिम जल्दी कर रहे हैं? (50)
क्या फिर जब वाक़े हो जाएगा (उस वक़्त) तुम उस पर ईमान लाओगे? अब (मानते हो) अलबत्ता तुम उस की जल्दी मचाते थे। (51)
फिर ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम हमेशगी का अज़ाब चखो, तुम्हें वही बदला दिया जाता है जो तुम कमाते थे। (52)

और आप (स) से पूछते हैं क्या वह सच है? आप (स) कहदें हां! मेरे रब की क़सम! बेशक वह ज़रूर सच है, और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (53)
और अगर हर ज़ालिम शख़्स के लिए (वह सब कुछ) हो जो ज़मीन में है, वह उस को फ़िदये में देदे, और वह चुपके चुपके पशेमान होंगे जब अ़ज़ाब देखेंगे, और उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला होगा, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (54)
याद रखो! अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, याद रखो! बेशक अल्लाह का वादा सच है, लेकिन उन के अक्सर जानते नहीं। (55)
वही ज़िन्दगी देता है, और वही मारता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (56)
ऐ लोगो! तहक़ीक़ तुम्हारे पास आ गई नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से, और शिफ़ा उस (रोग) के लिए जो दिलों में है, और मोमिनों के लिए हिदायत ओ रहमत। (57)
आप (स) कहदें, अल्लाह के फ़ज़्ल से, और उस की रहमत से, सो वह उस पर ख़ुशी मनाएं, यह उन (सब) से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (58)
आप (स) कह दें, भला देखो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारा, फिर तुम ने उस में से कुछ हराम बना लिया और कुछ हलाल, आप (स) कह दें, क्या अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया? या अल्लाह पर झूट बान्धते हो? (59)
और उन लोगों का क्या ख़याल है? जो घड़ते हैं अल्लाह पर झूट, क़ियामत के दिन (उन का क्या हाल होगा) बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र नहीं करते। (60)
और तुम नहीं होते किसी हाल में, और न उस में से कुछ क़ुरआन पढ़ते हो, और न कोई अ़मल करते हो, मगर हम तुम पर गवाह (बाख़बर) होते हैं जब तुम उस में मशग़ूल होते हो, और नहीं तुम्हारे रब से ग़ाइब एक ज़र्रा बराबर भी ज़मीन में और न आस्मान में, और न उस से छोटा और न बड़ा, मगर रौशन किताब में है। (61)

وَیَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِیْ وَرَبِّیْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؔ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ﴿۵۳﴾ ع ١٣ ٥ وقف النبی ﷺ

53	आजिज़ करने वाले	तुम हो	और नहीं	ज़रूर सच	बेशक वह	मेरे रब की क़सम	हां	आप कह दें	वह	क्या सच है	और आप (स) से पूछते हैं

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِی الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ

पशेमान	और वह चुपके चुपके होंगे	उस को	अलबत्ता फ़िदया देदे	ज़मीन में	जो कुछ	उस ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	हर एक शख़्स के लिए	हो	और अगर

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِیَ بَیْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۵۴﴾

54	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	इन्साफ़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला होगा	अ़ज़ाब	वह देखेंगे	जब

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ

और लेकिन	सच	अल्लाह का वादा	बेशक	याद रखो	और ज़मीन में	आस्मानों में	अल्लाह के लिए जो	बेशक	याद रखो

اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ هُوَ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۵۶﴾

56	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ़	और मारता है	ज़िन्दगी देता है	वही	55	जानते नहीं	उन के अक्सर

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوْرِ ۙ

सीनों (दिलों) में	उस के लिए जो	और शिफ़ा	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तहक़ीक़ आगई तुम्हारे पास	लोगो	ऐ

وَهُدًی وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۵۷﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ

और उस की रहमत से	अल्लाह	फ़ज़्ल से	आप कह दें	57	मोमिनों के लिए	ओ रहमत	और हिदायत

فَبِذٰلِكَ فَلْیَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَیْرٌ مِّمَّا یَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ

जो उस ने उतारा	भला देखो	आप कह दें	58	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	वह- यह	वह ख़ुशी मनाएं	सो उस पर

اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ

हुक्म दिया	क्या अल्लाह	आप (स) कह दें	और कुछ हलाल	कुछ हराम	उस से	फिर तुम ने बना लिया	रिज़्क़	से	तुम्हारे लिए	अल्लाह

لَكُمْ اَمْ عَلَی اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَی اللّٰهِ

अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	ख़याल	और क्या	59	तुम झूट बान्धते हो	अल्लाह पर	या	तुम्हें

الْكَذِبَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَی النَّاسِ وَلٰكِنَّ

और लेकिन	लोगों पर	फ़ज़्ल करने वाला	बेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन	झूट

اَكْثَرَهُمْ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَمَا تَكُوْنُ فِیْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ ع ٦ ١١

से - कुछ	उस से	और नहीं पढ़ते	किसी हाल में	और नहीं होते तुम	60	शुक्र नहीं करते	उन के अक्सर

قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَیْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِیْضُوْنَ

जब तुम मशग़ूल होते हो	गवाह	तुम पर	हम होते हैं	मगर	कोई अ़मल	और नहीं करते	क़ुरआन

فِیْهِ ؕ وَمَا یَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِی الْاَرْضِ وَلَا

और न	ज़मीन में	एक ज़र्रा	बराबर	से	तुम्हारा रब	से	ग़ाइब	और नहीं	उस में

فِی السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرَ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶۱﴾

61	किताबे रौशन	में	मगर	बड़ा	और न	उस	से	छोटा	और न	आस्मान	में

أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

62	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	न कोई ख़ौफ़	अल्लाह के दोस्त	बेशक	याद रखो

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया कि ज़िन्दगी	में	बशारत	उन के लिए	63	और वह तक़्वा करते रहे	ईमान लाए	वह लोग जो

وَفِى الْاٰخِرَةِ ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ

वह	यह	अल्लाह	बातों में	तबदीली नहीं	आख़िरत	और में

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	ग़लबा	बेशक	उन की बात	तुम्हें ग़मगीन करे	और न	64	बड़ी	कामयाबी

جَمِيْعًا ۭ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो कुछ	अल्लाह के लिए	बेशक	याद रखो	65	जानने वाला	सुनने वाला	वह	तमाम

وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ۭ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

सिवाए	पुकारते हैं	वह लोग जो	पैरवी करते हैं	क्या - किस	ज़मीन में	और जो

اللّٰهِ شُرَكَآءَ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

मगर (सिर्फ़)	वह	और नहीं	गुमान	मगर	वह नहीं पैरवी करते	शरीक (जमा)	अल्लाह

يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا

ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाया	जो - जिस	वही	66	अटकलें दौड़ाते हैं

فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	सुनने वाले लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	दिखाने वाला (रौशन)	और दिन	उस में

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ الْغَنِىُّ ۭ لَهٗ مَا

जो	उस के लिए	बेनियाज़	वह	वह पाक है	बेटा	अल्लाह	बना लिया	वह कहते हैं

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۭ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ

कोई	तुम्हारे पास	नहीं	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

سُلْطٰنٍۢ بِهٰذَا ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	क्या तुम कहते हो	उस के लिए	दलील

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ

झूट	अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	बेशक	आप (स) कह दें

لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِى الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ

फिर	उन को लौटना	हमारी तरफ़	फिर	दुनिया में	कुछ फ़ाइदा	69	वह फ़लाह नहीं पाएंगे

نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70	वह कुफ़्र करते थे	उस के बदले	शदीद	अज़ाब	हम चखाएंगे उन्हें

وقف لازم

ع ٧ الثلثة ٢

याद रखो! बेशक (जो) अल्लाह के दोस्त हैं न कोई ख़ौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जो लोग ईमान लाए और तक़्वा (ख़ौफ़े ख़ुदा और परहेज़गारी) करते रहे। (63)

उन के लिए बशारत है दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तबदीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। (64)

और उन की बात तुम्हें ग़मगीन न करे। बेशक तमाम ग़लबा अल्लाह के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (65)

याद रखो! बेशक जो आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और किसी की पैरवी (नहीं) करते वह लोग जो अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं मगर (सिर्फ़) गुमान की पैरवी करते हैं, ओर वह सिर्फ़ अटकलें दौड़ाते हैं। (66)

वही है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिम करो और दिन रौशन, बेशक उस में सुनने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (67)

वह कहते हैं अल्लाह ने बना लिया (अपना) बेटा। वह पाक है, वह बेनियाज़ है, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तुम्हारे पास नहीं है उस के लिए कोई दलील, क्या तुम अल्लाह पर वह बात कहते हो जो तुम जानते नहीं? (68)

आप (स) कह दें, बेशक वह लोग जो अल्लाह पर झूट घड़ते हैं फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) नहीं पाएंगे। (69)

दुनिया में कुछ फ़ाइदा है, फिर उन को हमारी तरफ़ लौटना है, फिर हम उन्हें शदीद अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे उस के बदले जो वह कुफ़्र करते थे। (70)

وقف لازم

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ

तुम पर	गरां	अगर है	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम से	जब उस ने कहा	नूह (अ)	ख़बर (क़िस्सा)	उन पर (उन्हें)	और पढ़ो

مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا

पस तुम मुक़र्रर कर लो	मैं ने भरोसा किया	पस अल्लाह पर	अल्लाह की आयतों से	और मेरा नसीहत करना	मेरा क़ियाम

اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ

मेरे साथ	तुम कर गुज़रो	फिर	कोई शुबाह	तुम पर	तुम्हारा काम	न रहे	फिर	और तुम्हारे शरीक	अपना काम

وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ

मेरा अजर	तो-सिर्फ़	कोई अजर	तो मैं ने नहीं मांगा तुम से	तुम मुँह फेर लो	फिर अगर	71	और मुझे मोहलत न दो

اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ

तो उन्हों ने उसे झुटलाया	72	फ़रमांबरदार (जमा)	से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	अल्लाह पर	मगर (सिर्फ़)

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا

और हम ने ग़र्क़ कर दिया	जांशीन	और हम ने बनाया उन्हें	कश्ती में	उस के साथ	और जो	सो हम ने बचा लिया उसे

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

73	डराए गए लोग	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

रौशन दलीलों के साथ	वह आए उन के पास	उन की क़ौम	तरफ़	कई रसूल	उस के बाद	हम ने भेजे	फिर

فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى

पर	हम मुहर लगाते हैं	उसी तरह	उस से क़ब्ल	उस को	उन्हों ने झुटलाया	उस पर जो	सो उन से न हुआ कि वह ईमान ले आएं

قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى

तरफ़	और हारून (अ)	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर	74	हद से बढ़ने वाले	दिल (जमा)

فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

75	गुनाहगार (जमा)	लोग	और वह थे	तो उन्हों ने तकब्बुर किया	अपनी निशानियों के साथ	उस के सरदार	फ़िरऔन

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

76	खुला	अलबत्ता जादू	यह	बेशक	वह कहने लगे	हमारी तरफ़	से	हक़	आया उन के पास	तो जब

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ

और कामयाब नहीं होते	यह	क्या जादू	वह आगया तुम्हारे पास	हक़ के लिए (निस्बत) जब	क्या तुम कहते हो	मूसा (अ)	कहा

السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا

उस पर अपने बाप दादा	पाया हम ने	उस से जो	कि फेर दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	वह बोले	77	जादूगर

وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

78	ईमान लाने वालों में से	तुम दोनों के लिए	हम	और नहीं	ज़मीन में	बड़ाई	तुम दोनों के लिए	और हो जाए

और आप (स) उन्हें नूह (अ) का क़िस्सा पढ़ कर सुनाएं, जब उस ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम पर गरां है मेरा क़ियाम और मेरा अल्लाह की आयतों से नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, पस तुम और तुम्हारे शरीक अपना काम मुक़र्रर (पक्का) कर लो (ताकि) फिर तुम्हें अपने काम पर कोई शुबाह न रहे, फिर मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे मोहलत न दो। (71)

फिर अगर तुम मुँह फेर लो तो मैं ने तुम से कोई अजर नहीं मांगा, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह पर है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं रहूँ फ़रमांबरदारों में से। (72)

तो उन्हों ने उसे (नूह अ) को झुटलाया, सो हम ने बचा लिया उसे और उन्हें जो उस के साथ कश्ती में थे, और हम ने उन्हें जाँनशीन बनाया, और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया, सो देखो (उन लोगों का) अन्जाम कैसा हुआ? जिन्हें डराया गया था। (73)

फिर हम ने उस (नूह अ) के बाद कई रसूल उन की क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वह उन के पास रौशन दलीलों के साथ आए, सो उन से न हुआ के वह ईमान ले आएं उस (बात) पर जिसे वह उस से क़ब्ल झुटला चुके थे, इसी तरह हम हद से बढ़ने वालों के दिलों पर मुहर लगाते हैं। (74)

फिर हम ने भेजा उन के बाद मूसा (अ) और हारून (अ) को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस के सरदारों (दरबारियों) की तरफ़, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वह गुनाहगार लोग थे। (75)

तो जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ पहुँचा तो वह कहने लगे, बेशक यह अलबत्ता खुला जादू है। (76)

मूसा (अ) ने कहा, क्या तुम हक़ की निस्बत (ऐसा) कहते हो? जब वह तुम्हारे पास आगया, क्या यह जादू है? और जादूगर कामयाब नहीं होते। (77)

वह बोले क्या तू हमारे पास (इस लिए) आया है कि हमें उस से फेर दे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, और हो जाए तुम दोनों के लिए ज़मीन में बड़ाई (सरदारी मिल जाए) और हम तुम दोनों के मानने वालों में से नहीं। (78)

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَحِرٍ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ

जादूगर	आ गए	फिर जब	79	इल्म वाला	जादूगर	हर	ले आओ मेरे पास	फ़िरऔन	और कहा

قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَىٰ

मूसा (अ)	कहा	उन्हों ने डाला	फिर जब	80	डालने वाले हो	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)	उन से	कहा

مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ

काम	नहीं दुरुस्त करता	बेशक अल्लाह	अभी बातिल कर देगा उसे	बेशक अल्लाह	जादू	तुम लाए हो	जो

ع ٨ ١٢ ١٣ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾

82	मुजरिम (गुनाहगार)	नापसन्द करें	ख़्वाह	अपने हुक्म से	हक़	अल्लाह	और हक़ कर देगा	81	फ़साद करने वाले

فَمَا آمَنَ لِمُوسَىٰ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِنْ قَوْمِهِ عَلَىٰ خَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन	से (के)	ख़ौफ़ की वजह से	उस की क़ौम	से	चन्द लड़के	मगर	मूसा (अ) पर	ईमान लाया	सो न

وَمَلَائِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ

और बेशक वह	ज़मीन	में	सरकश	फ़िरऔन	और बेशक	वह आफ़त में डाले उन्हें	कि	और उन के सरदार

لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ

अल्लाह पर	ईमान लाए	तुम	अगर	ऐ मेरी क़ौम	मूसा (अ)	और कहा	83	हद से बढ़ने वाले	अलबत्ता-से

فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا

हम ने भरोसा किया	अल्लाह पर	तो उन्हों ने कहा	84	फ़रमांबरदार (जमा)	तुम हो	अगर	भरोसा करो	तो उस पर

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ

से	अपनी रहमत से	और हमें छुड़ादे	85	ज़ालिम (जमा)	क़ौम का	तख़्ता-ए-मशक़	न बना हमें	ऐ हमारे रब

الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّآ

कि घर बनाओ	और उस का भाई	मूसा (अ)	तरफ़	और हम ने वहि भेजी	86	काफ़िर (जमा)	क़ौम

لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا

और क़ाइम करो	क़िबला रू	अपने घर	और बनाओ	घर	मिसर में	अपनी क़ौम के लिए

الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ

बेशक तू	ऐ हमारे रब	मूसा (अ)	और कहा	87	मोमिनीन	और ख़ुशख़बरी दो	नमाज़

آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	में	और माल (जमा)	ज़ीनत	और उस के सरदार	फ़िरऔन	तू ने दिए

رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ

और मुहर लगा दे	उन के माल	पर	तू मिटा दे	ऐ हमारे रब	तेरा रास्ता	से	कि वह गुमराह करें	ऐ हमारे रब

عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾

88	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	कि वह ईमान न लाएं	उन के दिलों पर

और फ़िरऔन ने कहा मेरे पास हर इल्म वाला जादूगर ले आओ। (79)
फिर जब जादूगर आगए तो मूसा (अ) ने उन से कहा तुम डालो, जो डालने वाले हो (तुम्हें डालना है)। (80)
फिर उन्हों ने डाला तो मूसा (अ) ने कहा तुम जो लाए हो जादू है, बेशक अल्लाह अभी उसे बातिल करदेगा, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों के काम दुरुस्त नहीं करता। (81)
और अल्लाह हक़ को अपने हुक्म से हक़ (साबित) कर देगा अगरचे गुनाहगार नापसन्द करें। (82)
सो मूसा (अ) पर कोई ईमान न लाया मगर उस की क़ौम के चन्द लड़के ख़ौफ़ की वजह से फ़िरऔन और उन के सरदारों के, कि वह उन्हें आफ़त में न डाल दे, और बेशक फ़िरऔन ज़मीन (मुल्क) में सरकश था, और बेशक वह हद से बढ़ने वालों में से था। (83)
और मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमांबरदार हो। (84)
तो उन्हों ने कहा हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमें न बना ज़ालिमों की क़ौम का तख़्ता-ए-मशक़। (85)
और हमें अपनी रहमत से काफ़िरों की क़ौम से छुड़ादे। (86)
और हम ने मूसा (अ) और उस के भाई की तरफ़ वहि भेजी कि अपनी क़ौम के लिए मिसर में घर बनाओ और बनाओ अपने घर क़िब्ला रू (नमाज़ की जगह), और नमाज़ क़ाइम करो, और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दो। (87)
और मूसा (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बेशक तू ने फ़िरऔन और उस के लशकर को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत और बहुत से माल दिए हैं, ऐ हमारे रब! कि वह तेरे रास्ते से गुमराह करें, ऐ हमारे रब! उन के माल मिटा दे, और उन के दिलों पर मुहर लगा दे कि वह ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब देख लें। (88)

उस ने फ़रमाया तुम्हारी दुआ क़ुबूल हो चुकी है सो तुम दोनो साबित क़दम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जो नावाक़िफ़ हैं। (89)
और हम ने बनी इस्राईल को पार कर दिया दर्या से, पस फ़िरऔन और उस के लशकर ने सरकशी और ज़ियादती से उन का पीछा किया, यहां तक कि जब उसको ग़रक़ाबी ने आ पकड़ा वह कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं हूँ फ़रमांबरदारों में से। (90)
क्या अब? (ईमान की बात करता है) और अलबत्ता पहले तो नाफ़रमानी करता रहा और तू फ़साद करने वालों में से रहा। (91)
सो आज हम तुझे तेरे बदन से बचाएंगे (ग़रक़ नहीं करेंगे) ताकि तू (तेरी लाश) उन के लिए जो तेरे बाद आएं (इब्रत की) एक निशानी रहे, और बेशक लोगों में से अक्सर हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं। (92)
और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया, और हम ने उन्हें रिज़्क़ दिया पाकीज़ा चीज़ों से, सो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया यहां तक कि उन के पास इल्म आगया, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला करेगा रोज़े क़ियामत जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (93)
पस अगर तू उस (के बारे) में शक में हो तो हम ने उतारा तेरी तरफ़, तो उन लोगों से पूछ जो तुझ से पहले किताब पढ़ते हैं, तहक़ीक़ तेरे पास हक़ आगया है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस शक करने वालों से न होना। (94)
और न उन लोगों से होना जिन्हों ने झुटलाया अल्लाह की आयतों को, फिर तुम ख़सारा पाने वालों से हो जाओ। (95)
बेशक जिन लोगों पर तुम्हारे रब की बात साबित हो गई वह ईमान न लाएंगे। (96)
अगरचे उन के पास हर निशानी आजाए, यहां तक कि वह दर्दनाक अज़ाब देख लें। (97)

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ

राह	और न चलना	सो तुम दोनों साबित क़दम रहो	तुम्हारी दुआ	क़ुबूल हो चुकी	उस ने फ़रमाया

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ وَجٰوَزْنَا بِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ

पस पीछा किया उन का	दर्या	बनी इस्राईल को	और हम ने पार कर दिया	89	नावाक़िफ़ हैं	उन लोगों की जो

فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ

वह कहने लगा	ग़रक़ाबी	जब उसे आ पकड़ा	यहां तक कि	और ज़ियादती	सरकशी	और उस का लशकर	फ़िरऔन

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِىْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ

बनी इस्राईल	उस पर	वह जिस पर ईमान लाए	सिवाए	माबूद	नहीं	कि वह	मैं ईमान लाया

وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ

से	और तू रहा	पहले	और अलबत्ता तू नाफ़रमानी करता रहा	क्या अब	90	फ़रमांबरदार (जमा)	से	और मैं

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ

तेरे बाद आएं	उन के लिए जो	ताकि तू रहे	तेरे बदन से	हम तुझे बचा लेंगे	सो आज	91	फ़साद करने वाले

اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾ ع وَلَقَدْ بَوَّاْنَا ع ٩ ١٠ ١٤

और अलबत्ता हम ने ठिकाना दिया	92	ग़ाफ़िल हैं	हमारी निशानियां	से	लोगों में से	अक्सर	और बेशक	एक निशानी

بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ

पाकीज़ा चीज़ें	से	और हम ने रिज़्क़ दिया उन्हें	अच्छा	ठिकाना	बनी इस्राईल

فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	तुम्हारा रब	बेशक	इल्म	आगया उन के पास	यहां तक कि	उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِىْ شَكٍّ

मैं शक में	तू है	पस अगर	93	वह इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में जो	रोज़े क़ियामत

مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

तुम से पहले	किताब	पढ़ते हैं	वह लोग जो	तो पूछ लें	तेरी तरफ़	हम ने उतारा	उस से जो

لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾ ۙ

94	शक करने वाले	से	पस न होना	तेरा रब	से	हक़	तहक़ीक़ आगया तेरे पास

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ

से	फिर तू हो जाए	अल्लाह	आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो	से	और न होना

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

तेरा रब	बात	उन पर	साबित हो गई	बेशक वह लोग जो	95	ख़सारा पाने वाले

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾ ۙ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾

97	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	हर निशानी	आजाए उन के पास	ख़्वाह	96	वह ईमान न लाएंगे

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ

जब	क़ौम यूनुस (अ)	मगर	उस का ईमान	तो नफ़ा देता उस को	कि वह ईमान लाती	कोई बस्ती	होई	पस क्यों न

اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ

और नफ़ा पहुँचाया उन्हें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुसवाई	अ़ज़ाब	उन से	हम ने उठा लिया	वह ईमान लाए

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ

वह सब के सब	ज़मीन में	जो	अलबत्ता ईमान ले आते	तेरा रब	चाहता	और अगर	98	एक मुददत तक

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ

किसी शख़्स के लिए	और नहीं है	99	मोमिन (जमा)	वह हो जाएं	यहां तक कि	लोग	मजबूर करेगा	पस क्या तू

اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	गन्दगी	और वह डालता है	हुक्मे इलाही	मगर (बग़ैर)	ईमान लाए	कि

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي

और नहीं फ़ाइदा देतीं	और ज़मीन	आस्मानों	में	क्या है	देखो	आप कह दें	100	अ़क्ल नहीं रखते

الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا

मगर	वह इन्तिज़ार करते हैं	तो क्या	101	वह नहीं मानते	लोग	से	और डराने वाले	निशानियां

مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ

तुम्हारे साथ	बेशक मैं	पस तुम इन्तिज़ार करो	आप (स) कह दें	उन से पहले	जो गुज़र चुके	वह लोग	दिन (वाक़िआत)	जैसे

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ

उसी तरह	वह ईमान लाए	और वह लोग जो	अपने रसूल (जमा)	हम बचालेते हैं	फिर	102	इन्तिज़ार करने वाले	से

ع ١٠ ١١ ١٥ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	103	मोमिनीन	हम बचालेंगे	हक़ हम पर

فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह	सिवाए	तुम पूजते हो	वह जो कि	तो मैं इबादत नहीं करता	मेरे दीन	से	किसी शक में

وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ

से	मैं हूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	तुम्हें उठालेता है	वह जो	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	और लेकिन

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ

और हरगिज़ न होना	सब से मुँह मोड़ कर	दीन के लिए	अपना मुँह	सीधा रख	और यह कि	104	मोमिनीन

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ

न तुझे नफ़ा दे	जो	अल्लाह	सिवाए	और न पुकार	105	मुश्रिकीन	से

وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

106	ज़ालिम (जमा)	से	उस वक़्त	तो बेशक तू	तू ने किया	फिर अगर	नुक़्सान पहुँचाए	और न

पस क्यों न हुई कोई बस्ती कि वह ईमान लाती तो उस को उस का ईमान नफ़ा देता, मगर यूनुस (अ) की क़ौम (कि वह ईमान ले आई), जब वह ईमान लाए तो हम ने उन से दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का अ़ज़ाब उठा लिया, और उन्हें एक मुददत तक नफ़ा पहुँचाया। (98)
और अगर चाहता तेरा रब अलबत्ता जो ज़मीन में हैं सब के सब ईमान ले आते, पस क्या तू लोगों को मजबूर करेगा? यहां तक कि वह मोमिन हो जाएं। (99)
और किसी शख़्स के लिए (अपने इख़्तियार में) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ईमान ले आए, और वह डालता है (कुफ़्र की) गन्दगी उन लोगों पर जो अ़क़्ल नहीं रखते। (100)
आप (स) कह दें देखो क्या कुछ है? आस्मानों में और ज़मीन में। और निशानियां और डराने वाले (रसूल) उन लोगों को फ़ाइदा नहीं देते जो नहीं मानते। (101)
तो क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर उन्हीं लोगों जैसे वाक़िआत का जो उन से पहले गुज़र चुके, आप (स) कह दें पस तुम इन्तिज़ार करो बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (102)
फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को, और उसी तरह उन को जो ईमान लाए, हम पर हक़ (ज़िम्मा) है हम बचालेंगे मोमिनों को। (103)
आप (स) कह दें, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन (के मुतअ़ल्लिक़) किसी शक में हो तो मैं इबादत नहीं करता उन की जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, लेकिन मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (दुनिया से) उठा लेता है, और मुझे हुक्म दिया गया कि मोमिनों में से रहूँ। (104)
और यह कि अपना मुँह सब से मोड़ कर दीन के लिए सीधा रख, और हरगिज़ मुश्रिकों में से न होना। (105)
और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे नफ़ा दे सके, और न कोई नुक़्सान पहुँचा सके, फ़िर अगर तू ने (ऐसा) किया तो उस वक़्त तू बेशक ज़ालिमों में से होगा। (106)

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ

तेरा चाहे	और अगर	उस के सिवा	उस का	तो नहीं हटाने वाला	कोई नुक़्सान	अल्लाह	पहुँचाए तुझे	और अगर

بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ

और वह	अपने बन्दे	से	चाहता है	जिसे	उस को	वह पहुँचाता है	उस के फ़ज़्ल को	तो नहीं कोई रोकने वाला	भला

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ

से	हक़	पहुँच चुका तुम्हारे पास	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	107	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

तो सिर्फ़	गुमराह हुआ	और जो	अपनी जान के लिए	उस ने हिदायत पाई	तो सिर्फ़	हिदायत पाई	तो जो	तुम्हारा रब

يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى

वहि होती है	जो	और पैरवी करो	108	मुख़्तार	तुम पर	मैं	और नहीं	उस पर (बुरे को)	वह गुमराह हुआ

ع ١١ ٦ ١٦

اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

109	फ़ैसला करने वाला	बेहतरीन	और वह	अल्लाह	फ़ैसला कर दे	यहां तक कि	और सबर करो	तुम्हारी तरफ़

آيَاتُهَا ١٢٣ ❀ (١١) سُوْرَةُ هُوْدٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

रुकूआत 10 | (11) सूरह हूद / हूद (अ) | आयात 123

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾

1	ख़बरदार	हिक्मत वाले	पास	से	तफ़्सील की गईं	फिर	इस की आयात	मज़बूत की गईं	यह किताब	अलिफ़ लाम रा

اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا

मग़्फ़िरत तलब करो	और यह कि	2	और ख़ुशख़बरी देने वाला	डराने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	अल्लाह के सिवा	इबादत करो	यह कि न

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى

मुक़र्रर	वक़्त	तक	अच्छी	मताअ़	वह फ़ाइदा पहुँचाएगा तुम्हें	उस की तरफ़ रुजुअ़ करो	फिर	अपना रब

وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	तो बेशक मैं	फिर जाओ	और अगर तुम	अपना फ़ज़्ल	फ़ज़्ल वाला	हर	और देगा

يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤﴾ اَلَاۤ

याद रखो	4	क़ुदरत वाला	हर शै	पर	और वह	लौटना है तुम्हें	अल्लाह की तरफ़	3	बड़ा	एक दिन

اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ

अपने कपड़े	पहनते हैं	जब	याद रखो	उस से	ताकि छुपालें	अपने सीने	दोहरे करते हैं	बेशक वह

يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٥﴾

5	दिलों के भेद	जानने वाला	बेशक वह	और जो वह ज़ाहिर करते हैं	जो वह छुपाते हैं	वह जानता है

और अगर अल्लाह तुझे पहुँचाए कोई नुक़्सान तो उस के सिवा कोई उस को हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरा भला चाहे तो कोई उस के फ़ज़्ल को रोकने वाला नहीं, वह पहुँचाता है उस को अपने बन्दों में से जिस को चाहता है, और वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (107)

आप (स) कह दें, ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका, तो जिस ने हिदायत पाई सिर्फ़ अपनी जान के लिए हिदायत पाई, और जो गुमराह हुआ तो सिर्फ़ अपने बुरे को गुमराह हुआ, और मैं तुम पर मुख़्तार नहीं हूँ, (108)

और (उस की) पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ वहि हुई है, और सबर करो यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (109)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है, इस की आयात मज़बूत की गईं, फिर तफ़्सील की गईं हिक्मत वाले, ख़बरदार के पास से। (1)

यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं उस (की तरफ़) से तुम्हारे लिए डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ। (2)

और यह कि मग़्फ़िरत तलब करो अपने रब की, फिर उस की तरफ़ रुजूअ़ करो वह तुम्हें फ़ाइदा पहुँचाएगा अच्छा सामान, एक मुक़र्ररा वक़्त तक, और देगा हर फ़ज़्ल वाले को अपना फ़ज़्ल, और अगर तुम फिर जाओ तो बेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (3)

अल्लाह की तरफ़ तुम्हें लौटना है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (4)

याद रखो! बेशक वह अपने सीने दोहरे करते हैं ताकि उस (अल्लाह) से छुपालें, याद रखो! जब वह अपने कपड़े पहनते हैं वह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं, बेशक वह दिलों के भेद जानने वाला है। (5)